



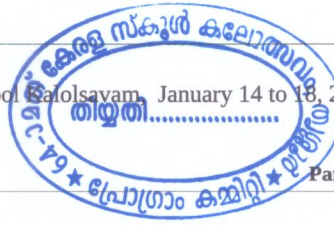
विषय: मिट्टी की पुकार

मिट्टी की मानव

मिट्टी की पुकार में भी कितना ताकत है,
जो घर छोड़कर चला गया है
उसे भी यह वापस लौटा सकता है।
उनके मन को बहला सकता है।

मिट्टी और मानव का यह रिश्ता है पुरानी,
इसको तोड़ना भी है मुश्किल भारी।
मानव को मिट्टी से अलग करना
काम नहीं है आसान उतना।

मानव अपनी मिट्टी की पुकार
कभी न कर पाया निरस्कार।
मिट्टी की प्रेम से बचने न पाया
मिट्टी की पुकार से लौटना उसे पड़ेगा।



जिस मिट्टी पर मानव खेल-कूदकर बड़ा
होता है, बड़े होकर उसी मिट्टी को
छोड़कर वह चला जाता है। दुवारा
पीछे मुड़कर भी न देखता है।

लेकिन हम यह न जानते हैं कि
हमारे मिट्टी हमें हर रोज याद करता है।
हमारे बापस आने की राह देख
वे आज भी इंतज़ार करता है।

बचपन में जिस मिट्टी से खेलते थे
बड़े होकर उसी मिट्टी से नफरत है।
तब जिस मिट्टी को चूमते थे हम,
अब उसी मिट्टी को छूने से डरते हैं हम।

मिट्टी हमें कभी भी दुख नहीं देता
मिट्टी तो हमें हर तरह से सजा देता।
इस धरती की जो सुंदरता है
इसके पीछे मिट्टी की कुरवाणी छूपा है।

जिस मिट्टी को शहर की आदमी
देखता भी नहीं, इसी मिट्टी पर
जिंदगी गुज़र देते हैं गाव की आदमी।
मिट्टी को मान वे जिंदगी अपनी।

क्या करोगे मिट्टी से दूर भागकर ?
जब जाना पड़ेगा मिट्टी में ही चोटकर ।
मिट्टी से नफरत करके क्या मिलेगा ?
मिट्टी के अंदर ही तो सुकून मिलेगा ।

जिस मिट्टी से बनी हो
उसी मिट्टी पर मिन जायांगे ।
जिस मिट्टी के लिदा लड़ हो
उसी मिट्टी पर आँखरी साँस छोडोगे ।

मिट्टी की पुकार को कोई
ठूकराने न पादागा, डर द्रक
की वक्त आने पर उसे वे
अपने पास पुकार लेंगा ।



Item Code: 956

Participant Code: 046

मिट्टी से जिनका भी दूर भागा
बौटना लूमहे पड़ेगा ।
हर भाग की तरह लूमहे भी
मिट्टी पर समाया जायगा ।